

ले डॉक्यूमेंट अनुसंधान के लिए

समस्या रचना आवश्यक है। जहाँ के अनुसार
समस्या की रचना इस प्रकार हो जिसका वैज्ञानिक प्रवृत्ति
द्वारा अन्वेषण किया जा सके।

समस्या की उत्पत्ति

[The Origin of the problem]

समस्या की उत्पत्ति उस परिस्थिति से होती है जिसमें
काफ़ीता जागृक होता है। उसे इस बात की जानकारी
होती है कि सुचारु रूप से कार्य करने के मार्ग
में बाधाएँ हैं। इन बाधाओं को दूर करके
सैद्धान्तिक या व्यावहारिक किसी समस्या का समाधान
हो सकता है। जिब्रासु तथा वैज्ञानिक प्रवृत्ति का व्यापक प्रत्येक
क्षेत्र में अनेक समस्याएँ पैदा होती हैं। उनके समाधान की
आवश्यकता एवं महत्व को समझता है। उसमें असन्तोष
होता है। यही असन्तोष तथा जिज्ञासा उसमें अनुसंधान प्रवृत्ति
पैदा करती है।

समस्या के स्रोत Sources of the Problem

जी. सी. अलमाफ ने कहा है —

- 1- ऐतिहासिक अभिलेखों का विश्लेषण।
- 2- व्याख्या में धिपी कमी का दूढ़ना।
- 3- ऐसे क्षेत्रों को दूढ़ना जो उपेक्षित रहे हैं।
- 4- आतिथमि-बताओं, विरोधाभास, मतभिन्नता जाँचें।

गुड, बार्, स्कैट्स का कहना है कि शिक्षा के क्षेत्र
में अनुसंधान के लिए समस्याओं को दूढ़ने हेतु निम्न
बातों को ध्यान में रखकर शैक्षिक साहित्य का गहन
अध्ययन किया जाय —

- 1- शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में कितना अनुसंधान कार्य
किया जा चुका है।

- 2 - नवीन प्रवृत्तियों का विश्लेषण ।
- 3 - किसी क्षेत्र-विशेष में प्राप्त आलोचनात्मक निबन्ध, पत्र-पत्रिकाएं तथा टिप्पणियां ।
- 4 - शिक्षासम्बन्धी आविष्कारवाणी ।
- 5 - अनुसंधान जिस कार्य ही रहा है ।
- 6 - अनुसंधान की आवश्यकता ।
उपरोक्त बातों की सहायता से आवश्यक समस्या को ढूँढा जा सकता है ।

समस्या चुनाव selection of a Problem

किसी भी समस्या विशेष के चुनाव के लिए निम्न चार कारणा ही सकते हैं —

- 1- अनुसंधानकर्ता की भाँच
- 2- इस अध्ययन को किसी बड़े अध्ययन का आधार बनाना चाहता है ।
- 3 - शैक्षिक परिस्थितियों में सुधार लाना चाहता है ।
- 4 - उसकी व्यापकगत महत्वाकांक्षा ।

समस्या चुनाव के सिद्धान्त

किसी विशेष समस्या के चुनाव करते समय अनुसंधानकर्ता को निम्न सिद्धान्तों (Criteria) को अपनाना चाहिए —

- 1- अनुसंधानकर्ता की भाँच (Researcher's Interest) का चुनाव करें जिसमें उसकी भाँच ही तभी वह अच्छी तरह कार्य कर सकेगा ।

2- अनुसंधानकर्ता की अभिवृत्तता Researcher's Aptitude

समस्या अनुसंधानकर्ता की अभिवृत्तता के अनुकूल हो, तभी अनुसंधानकर्ता समस्या को सच्चीतरह समझकर उस पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर ही कार्य सुगमतापूर्वक हो सकेगा।

3- समस्या ऐसी हो जिसपर कुछ कार्य ही चुका हो।

(Problem should be related to the field already

worked on)
अनुसंधानकर्ता को नयी समस्या नहीं लेनी चाहिए जिस समस्या पर पूर्व में काम हो चुका है उसी से सम्बन्धित समस्या दोन पर कार्य करने में सुविधा होती है।

4- समस्या मापन की सीमा में हो

(Problem should be within measurable limit)

समस्या ऐसी हो जिसका आसानी से मापन एवं मूल्यांकन किया जा सके। मापन एवं मूल्यांकन के लिए पर्याप्त उपकरण होना चाहिए। जटिल समस्या जिसका मापन एवं मूल्यांकन कठिन हो, का चुनाव नहीं करना चाहिए।

5- समस्या वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक रूप से

उपयोगी हो (Problem should be practically & theoretically significant)

वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक रूप से उपयोगी समस्या का चुनाव करना चाहिए। कभी नयी समस्या जो व्यावहारिक हो, का चुनाव नहीं करना चाहिए।

समस्या कथन (Statement of the Problem)

अनुसंधान के लिए शीघ्र कथन करते समय विषय को संतुलित, सरल तथा स्पष्ट शब्दों में रखना चाहिए। यही शीघ्रक उत्तम होता है जो समस्या को समुचित रूप में सीमित तथा बच्चुनिष्ठ हो। जैसे —

- 1 - माध्यमिक स्तर के छात्रों के पिछड़ेपन के कारणों का अध्ययन
- 2 - महिला तथा पुरुषों की आदिगम क्रमता का तुलनात्मक अध्ययन।
- 3 - प्रवेश के उपरान्त छात्रों की अनुपस्थिति का कारण एवं निवारण।

समस्या की परिभाषा (Definition of the Problem)

समस्या का परिभाषीकरण समस्या के मुख्य और उसकी व्यावहारिकता को स्पष्ट करता है। परिभाषीकरण से तात्पर्य अध्ययन की समस्या को चिंतन द्वारा सम्पूर्ण क्षेत्र से बाहर निकालकर समस्याक्षेत्र से बाहर निकालकर स्पष्ट करना है। W.S. Monroe ने कहा है — समस्या के परिभाषीकरण से तात्पर्य उसका शुद्धता एवं विस्तारपूर्वक विशेषण करना है। प्रत्येक प्रमुख तथा सहायक प्रश्न का विशेष स्पष्टीकरण आवश्यक है। अनुसंधान की सीमा भी निश्चित करनी होगी। क्या करना है, इसके निश्चय के लिए सम्बन्धित पूर्व अध्ययन का भी वर्णन करना होगा। इसके साथ ही कभी-कभी उन सिद्धान्तों पर भी विचार करना होता है जो अनुसंधान के लिए आधार बनते हैं। यदि कुछ अवधारणाएँ बनानी हैं तो उनका भी स्पष्ट कथन आवश्यक होगा। संक्षेप में कह सकते हैं कि —

- 1- समस्या से सम्बन्धित तन्त्रों का संग्रह।
- 2- यह निश्चित करना कि क्या निरीक्षण से वे संगत दिखायी देते हैं?
- 3- तन्त्रों से उस सम्बन्ध को ढूँढना जो कठिनाई का उत्पन्न कारण है।
- 4- कठिनाई के कारणों की अनेक व्याख्याएं (परिकल्पनाएँ) प्राप्त करना।
- 5- निरीक्षण तन्त्र विश्लेषण द्वारा यह निश्चित करना कि क्या वे संगत तन्त्रों में सम्बन्धित हैं?
- 6- समाप्ता-पूर्ण स्थिति में सूझ पौंछ करने वाले सम्बन्धों को विश्लेषणात्मक ढंग से ढूँढना।
- 7- तन्त्र तन्त्र व्याख्याओं के सम्बन्ध ढूँढना।
- 8- समस्या के विश्लेषण में निहित संवधारणाओं की जांच करना।